'नैतिक शिक्षा नवीन मूल्यों के सन्दर्भ में'

सविता राजपूत*

नैतिक शिक्षा से तात्पर्य ऐसे मार्गदर्शन से है जिससे व्यक्ति में अच्छे आचरणों की उत्पत्ति हो सके अर्थात् ऐसे कृत्य करने चाहिए जो स्वयं के अतिरिक्त दूसरों के लिए भी लाभकारी सिद्ध हो सके। नैतिक शिक्षा के नैतिक मूल्यों में कर्त्तव्यनिष्ठा, सत्य बोलना, मानव–प्रेम, बड़ों का सम्मान, आत्मनियंत्रण, मृदुभाषी परिश्रमी होना सहिष्णुता, सहयोग करना, क्षमा, स्वेच्छा, सहानुभूति, सहनशीलता, अच्छी आदतें, माता–पिता का सम्मान, देश–प्रेम तथा वचन का पालन करना इत्यादि कार्य और कार्य की मंशा नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत ही आते हैं।

आज शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य चरित्र निर्माण करना है और यह केवल नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है। चक्रवत्री राजगोपालाचारी ने लिखा है। 'विद्यार्थियों का चरित्र–निर्माण शिक्षा से संभव है और उसी के आधार पर राष्ट्र का विकास होता है।'

गांधी जी ने नैतिक शिक्षा के पहलू का विश्लेषण करते हुए कहा है, 'जो शिक्षा चित शुद्ध न करे, मन–इन्द्रियों को बस में रहना न सिखाए, निर्भयता व स्वावलम्बन न दे, निर्वाह कर साधन न बताए, गुलामी से मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र रहने का उत्साह व शक्ति उत्पन्न न कर सके, उस शिक्ष में चाहे कितनी भी जानकारी, खजाना, तार्किक कुशलता व भाषा पाण्डित्य हो, वह शिक्षा नहीं हैं।'

नैतिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की नींव है। कहा भी गया है– 'वृत यत्नेन संरक्षते वित्तमेति च यति शिक्षा' अर्थात् धन तो आता है चला जाता है, चरित्र जाकर फिर वापस नहीं आता है। इसकी यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। नैतिक शिक्षा मात्र तथ्यों की जानकारी, कथाओं का रटाना व आदेशों, प्रवचनों का देना मात्र नहीं है, बल्कि ज्ञान को अपने आचरण व व्यवहार में उतारना है।

मानव जीवन का विकास आज ऐसी अवस्था में पहुंच गया है, जहां मानव का अहम तीव्रता से जाग उठा है। आज समाज को नैतिक शिक्षा की आवश्यकता है। समय रहते मानव के पतन के नहीं रोका गया तो ऐसी स्थिति इस भूमि पर उत्पन्न हो जायेगी कि मानवीयता समाप्त हो जायेगी, मनुष्य अपने कर्तव्यों को भूल जायेगा, शिक्षक अपना धर्म व कर्तव्य भूलकर अपने शिक्षार्थियों को वांछनीय शिक्षा नहीं दे पायेंगे। विश्वास खत्म हो जायेगा, अमानवीयता जन्म तो ले ही लेगी परन्तु शीघ्र ही युवा बनकर राक्षसी कार्यों को अंजाम देने लगेगी। मनुष्य और जानवरों में कोई फर्क नहीं रह जायेगा। निठारी काण्ड जैसे नरभक्षी मानव रूपी जानवरी यहाँ–वहाँ असंख्य पैदा हो जायेंगे। अतः नैतिक शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है।

* असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र, डी.ए.वी. (पी.जी.) कालेज, देहरादून।

व्यक्ति जन्म से ही अन्य सभी प्राणियों की भांति ही होता है तथा वह अपने आचरण एवं व्यवहार से ही अपने आपको चरित्रवान बनाता है, नैतिक शिक्षा का लक्ष्य व्यक्तिगत का विकास करना होता है, व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का अर्थ उसके मूल्यों से ही निकल पाता है जिसका व्यक्तित्व मूल्यों पर आधारित होता है वह नैतिक व चरित्रवान माना जाता है, वे मूल्य समाजिक जीवन प्रणाली से निकले कुछ तो व्यवहार व मानक हैं जो व्यक्ति और समाज (सृष्टि व समिष्ट) के बीच व्यवहार और समायोजन के प्रयोजनों से कुछ विश्वासों और धाराणाओं से बनते हैं। शिक्षा ही मात्र वो साधन है, जो व्यक्ति को चारित्रिक और जीवन के उत्तम आदर्शों से अवगत कराती है। मानव जीवन को इस समस्त संसार का 'सरिमौर' माना जाता है और मानवीय जीवन के बिना नैतिकता का समावेश संभव नहीं। अतः यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि 'नैतिकता ही मानवता' है। मानवीय मूल्य बिना नैतिकता के संभव नहीं है। नैतिकता के बिना न तो मानवीय मूल्य विकसित किए जा सकते हैं और ये मूल्य शिक्षा के माध्यम से मानव में विकसित किए जा सकते हैं, बिना मूल्यों के शिक्षा और बिना शिक्षा के भारत का विकास संभव नहीं। मानव पूर्णरूपेण मानव तब बन सकता है जब उसमें पूर्ण शिक्षा के नैतिक पक्ष की मजबूती के साथ मूल्य विकसित हो पायेंगे।

सामाजिक मूल्य के सामाजिक मानव ;जंदकंतकद्ध लक्ष्य या आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। मूल्यामान रूपी मानदण्ड है जिसके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं। समाजशास्त्री मूल्यों का सम्बन्ध समाज के विश्वास आदर्श सिद्धान्त और सामाजिक मानदण्डों से जोड़ते हैं। उनकी दृष्टि से समाज में विश्वा आदेश सिद्धान्त और व्यवहार मानदण्ड ही समाज के मूल्य होते हैं। मनुष्यों की अनेक आवश्यकताएं होती है वह उनमें से कुछ का चुनाव करता है और ये उसके लिए लक्ष्य बन जाता है। लक्ष्यों में प्रतिस्पर्धा होती है, लक्ष्यों में जो सर्वोत्तम होना होता है वह उसका आदर्श बन जाता है। समाज इन आदर्शों से सम्बन्धित आदर्श नियम अथवा मानदण्डों का निर्माण करता है।

समाजशास्त्री डॉ. राधाकमल मुखर्जी ने मूल्यों को लक्ष्य के रूप में पारिभाषित किया –

'सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मान लक्ष्य या आदर्श हैं जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जा सकें।

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य होते हैं इन्हीं के द्वारा व्यक्ति के उन गुणों, योग्यताओं तथा क्षमताओं को विकसित किया जाता है, जो वस्तुतः जीवन मूल्यों में निहित होते हैं। नैतिक मूल्य ही मानव का सर्वोच्च मागर्दशन करते हैं। इस संसार में भोगों के अतिरिक्त उसे भोग की शक्ति प्रदान करते हैं, और नैतिक मूल्य ही मनुष्य की एक अलग पहचान बनते हैं। नैतिकता से मनुष्य में असंख्य गुणों का संचार होता है, जैसे आत्मविश्वास, आत्मबल, आत्मसंयम, त्याग, उदारता, सहिष्णुता, सद्भाव, परितृप्ति, परिश्रमती प्रवृत्ति आदि नैतिक मूल्यों से आत्मा का उत्थान होता है। व्यक्तिगत उन्नति होती है जिससे उच्च कोटि के समाज की संरचना होती है और मानव का निर्बाध गति से विकास होता है।

वर्तमान परिस्थितियों में सर्वाधिक आवश्यकता इस बात की है कि युवा एवं विद्यार्थियों को उनके विकास के लिए साधन उपलब्ध कराए जाएं। यदि हम अपने बच्चों को शिक्षा के साथ–साथ मूल्यों की ओर भी प्रेरित करें, तो हम संस्कृति को बनाए रख सकते हैं। क्योंकि मूल्याकत्मक शिक्षा के माध्यम से ही मानव विकास संभव है। बिना मूल्यों के शिक्षा और बिना शिक्षा के राष्ट्र का विकास संभव नहीं है। क्योंकि नैतिक मूल्य सम्पूर्ण शिक्षा के नींव होते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. मूल्य एवं नैतिक शिक्षा– आर.एल. चौपड़ा एवं ओम प्रकाश जांगिड़।
2. भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं – पी.डी. पाठक
3. मूल्य एवं नैतिक शिक्षण – रेनू चौधरी
4. शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग (उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षण) – लाल एवं पलोड़